राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 50.00 संख्या 2425
अभिशप्त
राज रजत वर्ष
भेड़िया
HEMANT RASHEED
नागराज
डोगा

संजय गुप्ता पेश करते हैं...

ALLROUNDER
PARKING
हम्फ! हम्फ!
राज कॉमिक्स है मेरा जनून!

नहीं!!!!!!!!!!!!!
अभिशप्त
लेखक
संजय गुप्ता
तरुण कुमार वाही
सहयोग
मंदार गंगेले
अनुराग सिंह
चित्रांकन
हेमंत
इंकिंग
जगदीश
कैलिग्राफी
हरीश शर्मा
इफैक्ट्स
शादाब, सुनील
सम्पादक
मनीष गुप्ता
3

नहीं!!!!!!!!!!!!!!!!!
म्याउं!
उफ नहीं! फिर वही डरावना सपना।
क्यों बार-बार आ रहा है ये सपना मुझे? क्या कोई मुसीबत आने वाली है? कैसी है वो जगह और वो भयानक प्राणी?
पिछली कई रातों से इसी सपने की वजह से ठीक से सो नहीं पाई हूं मैं। आखिर क्या रहस्य है इस सपने का?
क्या कोई सम्बंध है मेरा और इस सबका? नागराज और डोगा जो कि मानवता के रक्षक हैं। सपने में कैसा वीभत्स रूप दिखाई दे रहा है मुझे उनका। क्यों हमला करते हैं ये लोग मुझ पर और...।

भड़ाक
"कौन है वो भेड़िया मानव जो नागराज और डोगा के साथ था?"
"जो भी हो ये सपना किसी अनहोनी की ओर इशारा कर रहा है। जरूर कुछ अनहोनी घटने वाली है।"
आह! वार जबरदस्त था। सारे जोड़ जाम ढीले पड़ गए।
पर अभी दुश्मन की शारीरिक क्षमता की बड़ाई करना छोड़कर वस्तु स्थिति पर ध्यान देना होगा।
जो कि मेरे अनुकूल बिलकुल नहीं है।
पर प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल कैसे बनाया जाता है ये गुरुराज भाटिकी ने मुझे खूब सिखाया है।
हर्ररर!
आआआर्रर्घ!
पर ये प्राणी अचानक से जंगल में कहां से आ गए?
शांत जंगल में इन दैत्याकार प्राणियों के उत्पात मचाने का क्या कारण हो सकता है?

धाड़!
पर जंगल की शांति भंग करने वाले को दंड देना मेरा प्रथम कर्तव्य है। फिर वो मानव हो या दानव।
धाड़!
ओफ्फ! ये दो तरफा हमला कर रहे हैं।
देर हो रही है। ये भेड़िया मानव जरूरत से ज्यादा समझदार लग रहा है। हाथ-पांव की लड़ाई से ही प्राणियों को परास्त करने की कोशिश कर रहा है। पर यदि ऐसा हुआ तो मेरे किए कराए पर पानी फिर सकता है।
"थोड़ा और इंतजार करना होगा।"

कड़ाक
हे भेड़िया देवता मदद!
तुम लोगों ने मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं छोड़ा।
भेड़िया देवता की गदा जब भी प्रकट होती है महाविनाश लाती है। इसलिए मैं उसका आह्वान नहीं करना चाहता था।
पता है, पता है तभी तो तुझे इतना बेबस किया था कि तू गदा का प्रयोग करने पर विवश हो अब मुझे बस...

ओफ्फ!
"कोबी को गदा फेंकने पर मजबूर करना है और ये काम नभचर आसानी से कर सकता है।"
"उसकी टक्कर कोबी के क्रोध में घी डालने का काम करेगी।"
हे भेड़िया देवता! इन प्राणियों का कोई अंत है भी या नहीं।
"वो वार करने का पूरा प्रयास करेगा।"
"पर नभचर उसे कोई मौका नहीं देगा।"
"अंततः कोबी वही करेगा जो मैं चाहता हूं।"
"बाकी का काम नभचर संभाल लेगा।"

हे भड़िया देवता! ये क्या कर रहा है?
ओह! अब समझा। ये सारा प्रयास मेरी गदा चुराने के लिए किया जा रहा था। मगर मेरे रहते ये संभव नहीं होगा।
उफ!
ये तीव्र चक्रवात मुझे गदा तक पहुंचने नहीं दे रहा है। पता नहीं ये मुझे कहां ले जा रहा है।

आज का मैच हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है मिस्टर नरहरी। फाइनल तक आकर हार का स्वाद चखते हुए वापस लौट जाना ना हमें गंवारा होगा ना ही प्रशंसकों को।
मुझे पता है। आज का मैच सभी के लिए महत्त्वपूर्ण है। पर जॉन जैसे खिलाड़ी के आपकी टीम में होते हुए आपको किस बात की चिंता सता रही है मिस्टर मधुकरन?
नहीं मुझे चिंता नहीं सता रही! बल्कि मैं तो हमारी जीत के प्रति पूर्ण आश्वस्त हूं!
जॉन के होते हुए टीम के हारने की कल्पना करना भी मूर्खता होगी। टूर्नामेंट शुरू होने से अब तक, 9 मैचों में 21 गोल कर अपनी टीम को फाइनल तक पहुंचाकर 'प्लेयर ऑफ दी टूर्नामेंट' का अपना खिताब और ये फाइनल जितवा कर टीम को 'गोल्डन बॉल फुटबॉल टूर्नामेंट' का खिताब जॉन पक्का कर ही देगा।
बेशक! जीत हमारी ही होगी!
आपने हमारी टीम को लाजवाब खिलाड़ी दिया है नरहरी जी! उसके होते हुए हम ये फाइनल हार नहीं सकते।
वो खिलाड़ी नहीं साधक है मिस्टर मधुकरन! ऐसे खिलाड़ी बनाए नहीं जाते, पैदा होते हैं। मेरी कम्पनी 'ऑलराउंडर' ऐसे ही कोहिनूर हीरों को ढूंढकर उन्हें उनके सही स्थान तक पहुंचा रही है।
PARKING
मैंने भी यह मैच स्टेडियम में आकर देखने का फैसला जॉन की वजह से ही लिया है। उसे आंखों के सामने खेलते देखना ITS LIKE A VISUAL TREAT!
जी बिल्कुल!
उजालाऽऽ!

ओह! ये बिल्ली! बड़ी प्यारी बिल्ली है। पालतू है। लगता है रास्ता भटक गई।
उजाला! कहां चली गई उजाला? वापस आ जाओ!
उजाला क्यों परेशाऽऽऽऽऽना। ओफ्फ!
आह! माफ कीजिएगा! मुझे दिखाई नहीं देता! मैं अपनी उजाला को ढूंढ रही हूं। क्या आपने उसे कहीं देखा है।
उजाला!!
ऐ क्या करती हो? देखकर चलो। अंधी हो क्या?
क्या उजाला तुम्हारी बिल्ली का नाम है?
जी...जी हां! क्या आपने उसे कहीं देखा है?
यह लो तुम्हारी उजाला! बड़ी ही प्यारी बिल्ली है!
ओह उजाला! कहां भाग गई थी शैतान?
THANK YOU. THANK YOU SO MUCH SIR! ये अगर कहीं खो जाती तो मेरी आंखें ही चली जातीं।
क्या मतलब आंखें चली जातीं? तुम तो देख नहीं सकती ना?
हां! इसीलिए तो कहा। इसके होते हुए मुझे अन्य नेत्रहीनों की तरह छड़ी की आवश्यकता नहीं पड़ती।

क्या नाम है तुम्हारा?
जी, उजाला!
वो तो तुम्हारी बिल्ली का नाम है ना?
जी हां! मेरा भी नाम उजाला ही है।
अच्छा नाम है।
सर! चलें? मैच शुरू होने का वक्त हो गया।
SURE! ठीक है मिस उजाला, अपना और अपनी बिल्ली का ख्याल रखो! सड़क पर यूं घूमना आपके लिए खतरनाक हो सकता है।
SURE SIR, THANKS!
सुना तूने शैतान! खुद तो खतरे में पड़ेगी मुझे भी डाल देगी! चल मैच शुरू होने वाला है।
मिऊं!
ओफ्फ!
सर बचिए!
OH GOD! एक पल भी देर हो जाती तो... THANKS UJALA! सही समय पर आगाह किया तुमने।
हां अंधी हूं पर बहरी नहीं! आप लोगों का ध्यान बातों में था पर मैंने आती हुई वेन की आवाज सुन ली थी।
आइयो तुमको कइसा पता चला सामने से वेन आता? तुम तो अंधी ना?
अब चलिए!

"मैच शुरू हो चुका होगा।"
ये फाइनल भी हमारी ही टीम जीतेगी मिस्टर नरहरी। मैं अभी से आपको बधाई देता हूं।
...गोल!
ओ मार्वलस! विरोधी टीम से बॉल छीनकर क्या किक जड़ी है जॉन ने।
ये गोल तो होकर रहेगा। अरे...ये क्या? बिना बादलों के हवा में बिजलियां-सी कैसे चमक रही हैं।
कड़ड़ाक

कड़ड़ाक
ये...क्या है?
ऐसा नहीं हो सकता। ये मेरी आंखों का भ्रम है। ये तो...
कड़ड़
भागो!
भागो!
नहीं। रुक जाओ। इस तरह तुम लोग नहीं बच पाओगे। शांत हो जाओ आराम से निकलो।

जॉन ने... ये कैसे किया?
उफ्, ये क्या हो गया? ये क्या कर डाला जॉन ने। लेकिन उस बेचारे के पास भी तो कोई और तरीका नहीं था। इस हालात में मैं भी उसकी कोई मदद...
"...नहीं कर सकता। हैं...ये तो..."
चियुम्म!

"...डोगा है।"
ओह! डोगा भी आ गया और ये अजीबो गरीब प्राणी। ऐसे ही प्राणी देखे थे सपने में मैंने। कहीं ये सब उसी सपने से ही सम्बंधित तो नहीं।
GOLDEN CUP
तेरी काया में जुर्म का प्रवाह है। डोगा ऐसी काया से जिंदगी का प्रवाह खत्म कर देता है।
...कुछ भी नहीं।
वज्रा की काया में वज्र का प्रवाह है और वज्र से तीव्र कुछ नहीं होता।

आह...नहीं!
खिलाड़ी खत्म तो खेल खत्म और मेरा यहां का काम भी खत्म।
OPEPS
आह! जा रहा है वो शैतान डोगा के मुंह पर नाकामी का तमाचा मारकर।
मतलब शैतानियत का इंसानियत को तमाचा।

गहरे से गहरा घाव बड़े से बड़ा वार बर्दाश्त कर सकता हूं मैं, पर शैतानियत की जीत...
कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता।
कमजोरों और असहायों पर खूब जोर चलाते हैं ये शैतान।
पर अब और नहीं। डोगा पर जोर चलाकर दिखाए जरा शैतानियत।
अब डोगा तुझे बताएगा कि वज्र के प्रवाह से भी तीव्र एक प्रवाह होता है। डोगा के जुनून के लावे का।
इससे तीव्र कुछ भी नहीं है। कुछ भी नहीं।

PEPSI
GOLDE
ICICI BA
Ltd
उफ! राकेश ये क्या है?
ये...तो डोगा का मास्क है!
हे भगवान! ये है डोगा का असली चेहरा?
I CAN'T BELIVE THIS.
ये तो...ये तो...
...सचमुच का कुत्ता है!
बचो डोगा!

लव यू!
सॉरी कैटी!
भगवान तुम्हारी आत्मा को शांति दे मेरी प्यारी दोस्त। आई एम सॉरी।
डोगा!
सॉरी। मेरी वजह से तुम्हारी बिल्ली...अरे तुम तो अंधी हो।
अब हो गई हूं।

क्या मतलब?
सब बताऊंगी। फिलहाल यहां से निकलो। हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। शायद कुछ दिन!
तुम्हारी बातें रहस्यमय हैं। मुझे तो ये भी समझ में नहीं आ रहा कि तुम अंधी हो भी या नहीं।
अंधापन क्या होता है डोगा? कभी-कभी हल्का अंधेरा भी रोशनी का काम करता है और कभी तेज रोशनी भी अंधा कर देती है।
उफ राकेश! मुझे लेबर पेन शुरू हो गया।
व्हाट? अभी तो 7 महीने ही हुए हैं। अभी से पेन क्यों?
बेकार के सवाल मत करो। मुझे बहुत दर्द हो रहा है। कुछ करो जल्दी उफ!
OK! OK! मैं अभी एंबुलेंस बुलाता हूं।

24X7 NEWS
GOLDEN Ball TOURNAMENT
आप देख रहे हैं न्यूज 24X7- इस घंटे बड़ी खबरों में सबसे पहले गोल्डन बॉल फुटबॉल टूर्नामेंट। मशहूर फुटबॉल प्लेयर और मुम्बई जेट्स के मुख्य स्ट्राइकर जॉन ओ-ब्रायन की एक विचित्र प्राणी ने मैच के दौरान हत्या कर दी।
24X7 NEWS
हमलावर एक अजीबो गरीब म्यूटेंट प्राणी बतलाया जा रहा है। हमले की वजह का खुलासा नहीं हो पाया है। पुलिस ने इस मामले में कोई भी टिप्पणी करने से इनकार कर दिया है।
आज का सबसे बड़ा खुलासा- जॉन ने असाधारण शक्तियों का प्रयोग किया जो साधारण इंसान के पास होना संभव नहीं।
24X7 NEWS
आज की दूसरी बड़ी खबर- डोगा के मास्क के पीछे की सच्चाई सामने आई। डोगा के मास्क के पीछे जो सूरत है वो किसी आम इंसान की नहीं बल्कि...
एक कुत्ते की है।
जी हां! मुम्बई का रक्षक एक आम इंसान नहीं एक कुत्ता मानव है। इस खुलासे से मुम्बई की जनता में एक डर की लहर दौड़ गई है।
जॉन पर प्राणी का हमला, जॉन व डोगा का असाधारण इंसान व शक्तियों से लैस होना किसी बड़े अनिष्ट की ओर इशारा कर रहा है। अब यह घटना मुम्बई वासियों और दुनिया पर किस तरह प्रभाव डालती है, यह वक्त बताएगा।
हेडलाइन्स में फिलहाल इतना ही, देखते रहिए न्यूज 24X7।

अभी तक हम उसके दस साथियों को मौत के घाट उतार चुके हैं। पर हमारी रफ्तार कुछ धीमी है। रफ्तार तेज करनी होगी।
रफ्तार तेज करने से क्या होगा? हम उससे वैसे भी सीधे टक्कर नहीं ले पाएंगे। जैसे पहले उसने हमें पराजित किया वैसे ही इस बार भी कर देगा।
नहीं, इस बार नहीं।
इस बार वो हमें वश में नहीं कर पाएगा। पिछली बार हम असावधान थे। इस बार हम एकजुट व सचेत हैं।
पर मेरी समझ में एक बात नहीं आ रही हम इन लोगों को मार क्यों रहे हैं?
हमारी दुश्मनी उससे है। इन लोगों को मारकर हमारा कौन सा मकसद हल हो रहा है।
ताकत!
हम उसकी ताकत कम कर रहे हैं। वो अब अकेला नहीं है। इन लोगों के रूप में उसने अपनी ताकत कई गुना बढ़ा ली है और उससे सीधी टक्कर लेने से पहले हमें उसकी ताकत कम करनी होगी।
सही कहा। इनके रहते सीधी टक्कर लेना हमें मुश्किल में डाल सकता है। हमें पहले उसकी ताकत कम करनी होगी।
तो हम क्यों न एक साथ उसकी सारी ताकत कम कर दें।
सारी नहीं तो कम से कम आधी तो कर ही दें।
पर कैसे?
दोस्त को सम्पर्क करो। एक बार और सारा खेल खत्म।
लेकिन गुंजी और वाष्पक को तो आ जाने दो।

DATE :- 24-09-08
ये सब क्या हो रहा है चीफ। पिछले एक महीने में ये हमारे प्लेसमेंट किए हुए 10वें व्यक्ति पर हमला है। इसे हम मात्र एक संयोग नहीं कह सकते।
आपकी शंका जायज है MISTER RAMANI पर फिलहाल हमारे पास उसे संयोग मानने के अलावा कोई चारा नहीं है। पुलिस भी इस गुत्थी को सुलझा नहीं पा रही है।
मैंने आप सभी को सुरक्षा दृष्टि से एकत्रित किया है। हमें सावधान रहना होगा। यदि ये हमारे किसी दुश्मन की चाल है तो वो दुबारा हमला करेगा और निशाना कोई भी हो सकता है।
चाल तो ये हमारे दुश्मन की है चीफ। वरना वहां मौजूद 22 फुटबॉल खिलाड़ियों में से उस अजीबो गरीब प्राणी ने सिर्फ जॉन पर ही हमला क्यों किया?
और यह दुश्मन हमारा कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं हो सकता। इस तरह के शैतान प्राणियों को हमें मारने भेजने वाली जरूर कोई पारलौकिक शक्ति है।
देखिए आप लोग धैर्य से काम लें। अब जबकी खतरा हम सभी के सिरों पर मंडरा रहा है तो सभी को हिम्मत से काम लेना होगा।
पर उसके लिए हम पर जो पाबंदी आपने लगाई है वो हटानी होगी। क्या आप तैयार हैं।
क्या आप हमसे कुछ छिपा रहे हैं चीफ?

WELL, MISS HRITIKA! मैं चाहता तो नहीं था कि हम इस तरह किसी की भी नजरों में आएं पर अब स्थिति कुछ और है। तो ऐसे में आप सभी अपनी सुरक्षा के लिए अपनी स्किल्स का यूज कर सकते हैं। पर किस तरह से, ये आप लोग बखूबी जानते हैं।
तो मुझे लगता है, आज की हमारी मीटिंग यहीं समाप्त की जा सकती है। SO NOW WE CALL IT A DAY!
चीफ एक सवाल? क्या आप वाकई में सभी से कुछ छिपा रहे हैं?
मैंने आपसे पहले भी पूछना चाहा था पर...
कहीं कुछ है पर्दे के पीछे जो आप छिपा रहे हैं और अगर ऐसा है तो गलत कर रहे हैं आप। किसी भी वजह से आप सभी की जान जोखिम में डाल रहे हैं।
और सभी की जानों की जिम्मेदारी का पाप लेकर आप जी सकते हैं तो बेशक आप रहस्य को रहस्य बनाएं रखें। पर...
बस स्वीटी। काफी बोल चुकी तुम।
अब वक्त आ गया है कि तुम पांचों सच्चाई जान लो।
स्थिति हाथ से निकली जा रही है। अब तुम पांचों को अपना-अपना रोल जान लेना चाहिए। हमारी पूरी कम्युनिटी की जिम्मेदारी का भार मैं तुम पर डालने जा रहा हूं।

"हजारों साल पहले..."
"जब धरती उन विकृत दैत्यों के बोझ तले दब रही थी।"
कुकटस
बचाओ
बचाओ
"जिसके आतंक से समस्त भूमंडल कांपने लगा।"
"तब देवराज इंद्र ने पाप के अवतार के अंत के लिए अपने महाभीषण अस्त्र वज्र का प्रयोग किया।"
कुकटस
हाय मरा!
"उन विकृत दैत्यों का अधिपति था कुकटस।"
"वज्र पृथ्वी तक पहुंचते-पहुंचते अपने महाकाय रूप में आ चुका था।"

"वज्र उस भयंकर दैत्य कुकटस की छाती में धंस गया।"
आह!
भागो भागो
बचाओ
"इनमें कुकटस की हड्डिया भी थीं।"
"बाकी दैत्य भागने की कोशिश करने लगे पर उस वज्र का विकिरण महाघातक था। वो दैत्य भी उसकी चपेट में आने से बच नहीं पाए।"
"वज्र की ऊर्जा से सारे दैत्य जलकर भस्म हो गए। उनकी सिर्फ हड्डियां बचीं।"
ये कहानी तो खत्म हो गई चीफ। इसका हमारी समस्या से क्या संबंध है?
बहुत गहरा संबंध है स्वीटी! दरअसल हमारी कम्युनिटी की नींव यहीं से पड़नी शुरू हुई थी।

क्या मतलब?
मतलब ये कि उन विकृत दैत्यों के अंदर एक खास तत्व था जो उनको घातक विकिरण से बचाता था। जिसका नाम है म्युजेल।
म्युजेल? ये तो वही तत्व है जो हम म्युटेंट्स के अंदर पाया जाता है और
हमारी सभी शक्तियों का स्त्रोत है। यानी...
हां! धरती पर म्युटेंसी की शुरुआत वहीं से हुई। वहीं से अस्तित्व में आए म्युटेंट्स!
इसका मतलब आप जानते हैं कि इस दुनिया का पहला म्युटेंट कौन है?
हां! जानता हूं।
मैं!
कौन?
व्हाट?
हां और इस कहानी की शुरुआत होती है कुकटस की घटना से हजारों साल बाद! तब इसे मुंबई नहीं बल्कि वल्लभगढ़ कहते थे और वहां का राजा था...

"नरहरि यानी मैं।"
गुप्तचरों से प्राप्त सूचना के अनुसार राजा मकारो हजारों सैनिकों के साथ हमारे राज्य पर आक्रमण कर रहा है। इस युद्ध का परिणाम बड़ा भयंकर होगा। भयानक रक्तपात होगा।
हम उसकी सैन्य ताकत का मुकाबला नहीं कर सकते। किंतु हाथ पर हाथ रखकर भी नहीं बैठ सकते।
युद्ध और रक्तपात से बचा जा सकता है। क्यों ना उन्हें शापित क्षेत्र में ले जाया जाए? वो कालक्षेत्र है।
वहीं उनका अंत सम्भव है। वहां से आज तक कोई भी लौटकर नहीं आया।
महाराज। क्या आप ये चाहते हो कि हम अपनी सेना को स्वयं अपने हाथों से काल के मुख में धकेल दें?
किंतु जो भी वहां प्रवेश करेगा वो शापित हो जाएगा। और फिर कभी वापस लौट नहीं पाएगा।
राज्य की भलाई के लिए हममें से कुछ लोगों को अपना बलिदान देना ही होगा और राजा होने के नाते यह मेरा प्रथम कर्तव्य है।
बोलो कौन-कौन योद्धा मेरे साथ बलिदान देने को तैयार है?
नहीं राजगुरु। सारी सेना उस काल क्षेत्र में प्रवेश नहीं करेगी!
"राजा नरहरि ने अपने नेतृत्व में नौं सेना नायकों गजबली, गजावर, वज्रकाल, शतावर, वीर भुजंग, कोपदृष्टी, शनिकेतु, राहुदृष्टी और वृद्धबाहु के रुप में एक जत्थे का निर्माण किया।"
"योजनानुसार राजा नरहरि की सेना राजा मकारो की सेना को अपने पीछे भगा ले चली।"
पीछा करो उनका। सबको समाप्त कर दो।

"राजा नरहरि की सेना का पीछा करती राजा मकारो की पूरी सेना शापित क्षेत्र में प्रवेश कर गई।"
वो धोखा खा गए। वो हमारे पीछे आ गए।
धूल के गुबार के कारण उन्हें पता ही नहीं चला कि अभिशप्त क्षेत्र में हम केवल दस घुसे हैं। शेष सेना पीछे ही उतर चुकी है
और घोड़ों पर पहले से ही बैठाए गए सैनिकों के पुतले उनके स्थान पर यहां पहुंचे हैं।
उन्होंने हम पर आक्रमण किया है। उन्हें अभिशाप तो बाद में मारेगा, पहले हम मार देंगे।
हां गजबली लेकिन पहले यहां के...
...अभिशप्त राक्षसों से निबट लो।
ओह! यहां हमारा सामना ऐसे जीवित राक्षस प्राणियों से होगा ये तो हमने कभी सोचा भी नहीं था।
ये वो लोग होंगे, जो भूलवश अभिशप्त क्षेत्र में घुसे होंगे। और अभिशाप ने उन्हें ऐसा बना दिया होगा।
राजा मकारो की सेना भी आ गई।
वो रहे।

"मगर इससे पूर्व कि राजा मकारो की सेना वहां पहुंच पाती,और भी शक्तिशाली राक्षस प्राणी वहां आ पहुंचे।"
उन्होंने राजा मकारो और उसकी सेना को घेर लिया है। अब उन्हें समाप्त किए बिना वो हम तक नहीं पहुंच पाएंगे।
राजा मकारो उनसे जीत नहीं पाएगा और राक्षस प्राणी उनका अंत करने के बाद हमें अपना निशाना बनाएंगे। हमें यहां से निकल जाना चाहिए।
"राजा मकारो की तलवार ने कहर बरपा दिया।"
चींटियों की तरह मसले जाओगे।
खच्चाक!!!
धड़ाक!!
ये कैसा नरक का सा दृश्य है।
क्या किसी प्राणी के कंकाल ऐसे हो सकते हैं!
स्फटिक के कंकाल!

"राजा नरहरि और सभी सेनानायक कूकटस के कंकाल तक जा पहुंचे।"
ये स्थान अभिशप्त है। यहां कुछ भी हो सकता है।
उस कंकाल को देखो।
अद्भुत!!
"राजा नरहरि ने कंकाल की हड्डियों में से वज्र को खींचने के लिए जैसे ही उसे छुआ।"
आह!
"वज्र की ऊर्जा शक्ति ने उन्हें दूर उछाल फेंका।"
म...मुझे कुछ हो रहा है।
मुझे भी कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है।

"राजा मकारो उन विशालकाय अभिशप्त प्राणियों को समाप्त कर खूंखारता से गरजता वहां आ पहुंचा। लेकिन"
मक्कार राजा नरहरि अपने सेनानायकों के साथ इसी स्थान पर कहीं छुपा होगा। नकली सेना के साथ हमें भ्रमित करके यहां लाने के पीछे वो ना जाने क्या चाल चल रहा है। पहले उन्हें ढूंढ़कर खत्म करना होगा।
"राजा नरहरि और उसके सेनानायकों को ढूंढ़ने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।"
ओह! यहां और भी अभिशप्त प्राणी हैं।
इनके पास तो प्रलयंकारी शक्तियां हैं।
खच्चाक
हमें इनसे भी निबटना होगा।
"राजा मकारो की पूरी सेना भी उन भयानक प्राणियों का मुकाबला नहीं कर पाई।"

"देखते ही देखते नरक के वे प्राणी राजा नरहरि और उसके सेनानायकों में परिवर्तित हो गए।"
विजय!
हम जीत गए।
हम तो इस स्थान को अभिशप्त समझ रहे थे। किंतु यहां तो हमें शक्ति का वरदान मिल गया। उस वज्र को स्पर्श करते ही ये शक्ति हममें आई है।
सारी दुनिया पर हमारा ही राज होगा।
इस शक्ति के दम पर हम सारे संसार को अपने कदमों में झुका सकते हैं।
ठहरो। जिसे तुम शक्ति समझ रहे हो, वो शक्ति नहीं अभिशाप है। हमें अभिशाप लग चुका है। हम अभिशप्त हो गए हैं।
और इस अभिशाप के साथ हम अपनी दुनिया में वापस नहीं लौट सकते।
ये अभिशाप कैसे हो सकता है। इसी शक्ति के बल पर तो हमें विजय मिली है।
जो शक्ति समाज व प्राणी का अहित करे वो अभिशाप है और जो शक्ति समाज के हित में प्रयोग हो, वो वरदान है।
शक्ति प्राप्त होते ही तुम सब संसार पर विजय प्राप्त करने का स्वप्न देखने लगे।
शक्ति का अहंकार बड़ी बड़ी तबाहियों को जन्म देता है और अहंकारी ताकत का प्रयोग हमेशा पर पीड़ा के लिए करते हैं।
यहां बिखरे पड़े इन दैत्याकार कंकालों को देखो। इनमें भी अद्भुत ताकत रही होगी। पर इनका हश्र क्या हुआ? अंततः स्वयं ईश्वर को इनका नाश करना पड़ा।
ये शक्ति नहीं विकृति है जिसे लेकर यदि हम अपनी दुनिया में वापस लौटे तो हमारा अभिशाप हमारी पीढ़ियों में स्थानांतरित होगा। तब उनका विनाश निश्चित है। नहीं। हम यहां से नहीं लौट सकते।

इस वज्रशक्ति को स्पर्श करने से ही हमारे शरीरों में शक्तिशाली परिवर्तन हुए हैं। हमें कुछ ऐसा करना होगा कि भविष्य में कोई इसे स्पर्श ना कर पाए।
आप ठीक कहते हैं महाराज। हम आपके निर्णय का स्वागत करते हैं।
किंतु हम आपके निर्णय से सहमत नहीं।
हां। हमें वापस लौटने से कोई नहीं रोक सकता।
"राजा नरहरि के पास किसी भी प्राणी की भावनाओं को नियंत्रित करने की शक्ति आ गई थी।"
अपनी भावनाओं को नियंत्रित करो।
हमें क्षमा करें महाराज।
हम लोग चाहें तो इस विकृति के साथ उन्हीं विशालकाय खूंखार प्राणियों के समान इस अभिशप्त क्षेत्र में जीवित रह सकते हैं।
किंतु हम ऐसा नहीं करेंगे।
हमें आत्माहुति देनी होगी।
किंतु मकारो की सेना के भयंकर प्रहार भी हमें मारना तो दूर हमें एक घाव तक भी नहीं लगा सके। अर्थात कोई भी शक्ति हमें मार नहीं सकती। ऐसे में हम आत्माहुति किस प्रकार देंगे।
ये कंकाल ही हमारी समाधि बनेंगे।
गुरुत्वा तुम्हें इन कंकालो से एक गुम्बद बनाना होगा जिसे प्राणवायु भी पार ना कर सके।

"राजा नरहरि और उनके सेनानायकों ने अपनी शक्तियों के दम पर वहां बिखरे पड़े स्फटिक कंकालों से एक गुम्बद का निर्माण कर डाला।"
"गुम्बद के भीतर सभी का अंत हो गया।"
"वज्र शक्ति भी उसी में कैद हो गई।"
लेकिन राजा नरहरि की नीयत में खोट था!
"जिस समय डोम का आखिरी हिस्सा बंद हो रहा था, राजा नरहरि उसमें से बाहर खिसक गया।"
हाहाहा! सारे संसार पर राज करूंगा केवल मैं।
अब तुममें से मुझे कोई चुनौती देने वाला नहीं होगा।
37

"राजा नरहरि ने तीन सौ सालों तक पूरे संसार पर एकछत्र राज किया।"
"सैकड़ों राज्यों को जीता।"
"तब एक दिन-"
राजा। तू हमारे राज्य को जीतने आया है। युद्ध से पूर्व हम सभी स्त्रियों व बच्चों को कत्ल कर दे।
क्योंकि इस युद्ध के पश्चात हमारे नगर में एक भी पुरुष जीवित नहीं रहेगा। सभी तेरे हाथों मारे जाएंगे।
हम किसके आसरे जिएंगे। हमें मृत्यु दे दे राजा।
"राजा नरहरि उस घटना से द्रवित हो गया और राजपाट त्याग कर अज्ञातवास को चला गया।"
"संसार के दुखी लोगों की भावनाओं को नियंत्रित कर उन्हें प्रसन्नता के खजाने से मालामाल करने में उसे एक अद्भुत सुखद आत्मिक शांति का आभास हुआ।"
"दुनिया का विकास होता चला गया। सैकड़ों बरस व्यतीत हो गए। इसी दौरान उसे ऐसे कई व्यक्तियों का पता चला जिनमें म्यूटेंट पॉवर थी।"
कार की गति के साथ रेस लगा सकता है ये। अद्भुत।
"ये म्यूटेंट्स समाज से भिन्न होने के कारण खुद की अतिशक्तियों को ना समझ पाते थे ना ही व्यक्त कर पाते थे। जिस कारण ये अवसाद में चले जाते थे। कुंठाओं का शिकार होकर या तो पागल हो जाते थे या घरों को छोड़ कर भाग जाते थे।"

"राजा नरहरि ने उन्हें एकत्रित किया। उनकी मानसिक दुविधाओं का उपचार किया।"
घबराओ मत। तुम ठीक हो जाओगे।
उसके बाद मैंने यह प्लेसमेंट कम्पनी स्थापित करने का फैसला लिया! तुम जैसे भिन्न और अद्भुत शक्तियों वाले इंसानों को तुम्हारी क्षमताओं के अनुसार उचित स्थानों पर लगवाया जिससे तुम लोग समाज में उचित स्थान पा सको और अपनी शक्तियों के बल पर मानवता और समाज का भी कल्याण कर सको!
इसका मतलब ये है चीफ कि आपके सेनानायक आजाद हो चुके हैं और क्योंकि वो आप पर सीधा हमला नहीं कर सकते इसलिए वो हमें टार्गेट कर रहे हैं।
हां। शायद मेरी शक्ति कम करने के लिए।
पर अब चूंकि हम सतर्क हैं! तो वे शैतान अपनी कुत्सित मंशाओं को साकार रूप नहीं दे पाएंगे।
खतरा कितना बढ़ चुका है यह ना नरहरि जानता था ना ही एम्प्लॉयी।

पर जल्द ही खतरा सारी दुनिया के सामने आने वाला था।
डॉक्टर जल्दी आइए। बैड नम्बर-3 की पेशेंट ने बच्चे को जन्म दे दिया है और...
शहर के कई अस्पताल में जन्म विकार के साथ शिशु जन्म ले रहे थे।
ये सब डोगा की वजह से हुआ। उसका मास्क मेरे पेट पर गिरा तभी मेरा बच्चा ऐसा पैदा हुआ है।
वो इंसान नहीं। वो कोई शैतान है अभिशाप है वो अभिशाप।
ये बढ़ते प्रदूषण का असर है या कोई महामारी?
अगर ये महामारी है तो आखिर कहां से पैदा हो रही है ये बीमारी। कौन है इसका जिम्मेदार?
शिशुओं में कहां से आया ये विकार?
कुछ पेट्स में भी देखे गए हैं ऐसे विकार! शहर में फैली सनसनी।
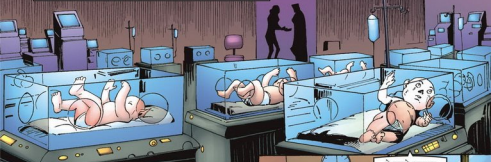
Amaan
हमारे बीच हैं म्यूटेशन पर रिसर्च कर रहे प्रोफेसर भास्कर और जीव विज्ञानी प्रोफेसर राम शास्त्री। आइये इनसे जानते हैं शिशु जन्म विकार की वजह।
प्रोफेसर राम शास्त्री। इस बारे में आप के क्या विचार हैं? क्या पेट्स से शिशुओं में आए हैं ये विकार?
प्रदीप, मेरे विचार में शिशुओं में विकार पेट्स से नहीं आए हो सकते। बल्कि मानव शिशुओं व पेट्स में विकार की वजह या स्त्रोत एक ही हो सकता है। ये एक तरह की म्यूटेशन ही है...
मानव विकास क्रम में किसी प्राणी में DNA या जेनेटिक बदलाव जिस विपरीत वातावरण में वो रह रहा है उसकी आवश्यकतानुसार हजारों साल मे होता है। जिसे एवोल्यूशन कहते हैं।
किंतु कुछ बदलाव अचानक होते हैं। उन्हें म्यूटेशन कहा जाता है।
कई तरह के रसायन और भौतिक पदार्थ प्राणी में म्यूटेशन के लिए जिम्मेदार होते हैं जिन्हें म्यूटेजन्स कहते हैं...।
...जैसे अल्ट्रा वॉयलेट विकिरण म्यूटेशन फैलाने वाला एक *म्यूटाजन है।
MUTAGEN!
शिशुओं में जन्म विकार का कारण भी इन्हीं में से एक हो सकता है।
लेकिन प्रोफेसर राम शास्त्री किसी एक बच्चे के पिता का ये दावा है
कि बच्चे के जन्म से ठीक पहले उसकी पत्नी के गर्भ पर डोगा का मास्क आकर गिरा था। उसी के कारण उसके बच्चे की नाक कुत्ते जैसी हो गई।

मुझे नहीं लगता कि मास्क से म्युटेंसी फैल सकती है। हालांकि कुत्ते की लार में खतरनाक वायरस होते हैं। जो मास्क के द्वारा गर्भवती स्त्री तक पहुंच सकते हैं,
मगर फिर भी एक अकेला डोगा मुम्बई में फैले बर्थ डिफेक्ट का कारण नहीं हो सकता। क्यों प्रोफेसर शास्त्री।
क्यों नहीं हो सकता प्रोफेसर भास्कर। मेरे विचार से ऐसा ही हुआ होगा।
फिर तो आप कहेंगे कि सांप जैसी स्किन वाला बालक नागराज की वजह से हुआ है।
हां बेशक ऐसा हो सकता है। डोगा और नागराज जैसे रक्षक तो सालों से हमारे शहरों में हैं।
लेकिन उनकी वजह से अब तक कोई म्युटेंसी नहीं फैली। अब ऐसा क्या हो गया? क्या कोई सुप्त वायरस सक्रिय हो गया है।
हां। कई बार वायरस सुप्त रहते हैं। जैसे ही उनको पनपने का मौका मिलता है, वो सक्रिय हो जाते हैं।
ये कोरी बकवास है। बाकी शिशुओं में अलग-अलग दूसरे प्राणियों के लक्षण देखे गए हैं। उनमें वो विकार कहां से आए।
ऐसे और भी प्राणी हो सकते हैं जैसे जॉन में भी तो अति मानवीय शक्तियां देखी गई थीं। हो सकता है वो भी म्युटेंट हो।
आप ये कहना चाहते हैं प्रोफेसर कि हमारे समाज में कई म्युटेंट्स प्राणी रहते हैं। अपनी पहचान छुपाकर।
जी हां! नागराज, डोगा और जॉन के रूप में मैं अपनी बात को सत्यापित कर चुका हूं। इनके अलावा एक प्राणी और है जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।
असम के जंगलों में रहता है और नाम है उसका कोबी!

MUMBAI AIRPORT

ये बम समझ से बाहर है। समय कम है और ये लोग अपनी जुबान खोल नहीं रहे।

पर बम को डिफ्यूज तो करना होगा वरना करोड़ों के विमान की हानि होगी और विस्फोट इतना जबरदस्त होगा कि आसपास का एक किलोमीटर का एरिया चपेट में आ जाएगा।

इन्हें अपनी जुबान खोलनी ही होगी।

INDIAN AIRLINES

अब भी वक्त है बता दो इस बॉम्ब को डिफ्यूज कैसे किया जा सकता है? बता दोगे तो बच जाओगे नहीं तो तुम लोगों का बुरा अंजाम होगा।

कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी। पर अगर कुत्ते की पूंछ सीधी ना कर पाओ तो बेहतर है कुत्ते की पूंछ ही काट दो। इस कुत्ते की पूंछ भी कटेगी।

मौत से कौन डरता है हिन्दुस्तानी कीड़ों। ब्लास्ट तो होकर ही रहेगा। कर लेना जो करना है।

बॉम्ब को डिफ्यूज करने की एक आखिरी कोशिश तो करनी ही होगी।

लेकिन सर! इसमें आपकी जान को खतरा है।

खतरों से खेलना ही तो काम है हमारा। हवाई पट्टी को 1 किलोमीटर की रेंज तक खाली करवाया जाए!

Aimaan
तू अभी नया है इसलिए तुझे नहीं पता, कई बार मौत के मुंह में जाकर मौत को ठेंगा दिखाकर वापस आ चुके हैं। गोविलकर सर!
ये तो सीधे-सीधे मौत को गले लगाना हो गया। मानना होगा गोविलकर सर को।
कश्मीर में एक विस्फोट में लगी आग में से चार बच्चों को बचाकर लाना। 50 गोलियां खाकर भी जिंदा बच जाना।
20 उग्रवादियों से अकेले भिड़ जाना। ऐसे कई करिश्मे किए हैं सर ने और भगवान उनका साथ हमेशा देते हैं।
पर फटने के बाद भी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा।
इसे अपने अगोश में लेकर इसमें ब्लास्ट करवाना होगा।
बॉम्ब को डिफ्यूज करना वाकई असंभव है। खैर सभी को यहां से दूर भेजने का मेरा मकसद बॉम्ब को डिफ्यूज करना था भी नहीं। अब चूंकि बॉम्ब डिफ्यूज नहीं हो सकता तो फटेगा जरूर।
"अब ब्लास्ट होगा तो, पर किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा।"
बूडूम!!!
OH GOD! ब्लास्ट हो गया। गोविलकर सर नजर नहीं आ रहे। आखिर मौत ने उन्हें गले...
लगा...! गोविलकर सर! आप ठीक हैं?
मौत को गले लगा कर तो हम सदा ही चलते आए हैं। पर मौत हमें तभी गले लगा सकती है जब ऊपर वाला चाहेगा। मैं एकदम ठीक हूं।

पर अब ठीक नहीं रहोगे।
अब ये क्या मुसीबत?
आतंकवादियों की बैकअप यूनिट लगती है।
आतंकवादी नहीं आतंक का पर्याय, गुरुत्वा।
आतंकवादी हो या आतंक का पर्याय, अंजाम तो तेरा वही होना है जो सभी आतंकवादियों का होता है।
फर्क होता है। आतंकवादी होने और स्वयं आतंक का पर्याय होने में फर्क होता है।
आतंकवादी कोई भी बन सकता है। पर आतंक का पर्याय बनने के लिए खुद में आतंक बनने का माद्दा होना चाहिए।
ये तुम लोगों को अभी पता चलेगा।
क्योंकि जिस काम के लिए मैं यहां आया हूं। उसे रोकने का दम तुम मामूली इंसानों में नहीं है।
पर तुम इंसानों से कोई दुश्मनी नहीं है मेरी। तुम इस लड़ाई का हिस्सा ना बनो तो ये तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

तो अगर जिंदा रहना चाहते हो तो भाग जाओ। वरना अपने भयंकर अंजाम के लिए तुम खुद जिम्मेदार होगे।
पर तू तेरे अंजाम से बच नहीं सकता। मानवता और इंसानियत के हक में ये तेरा आखिरी काम था।
नायकों वाला तेरा काम यहीं खत्म।
हम्फ! गलत।
मानवता और इंसानियत के हक में काम करने वालों के काम खत्म नहीं होते।
खत्म होते हैं तो तुम जैसे इंसानियत और मानवता के दुश्मन।
मुझे नहीं पता तुझे किसने और क्यों भेजा है। पर मुझे इतना जरूर अहसास हो गया है कि तू उसी वज्रा का साथी है जिसने जॉन को मौत के घाट उतार दिया।
जॉन बच नहीं पाया क्योंकि वो असावधान था।
पर मैं असावधान नहीं हूं। ऐसी ही किसी स्थिति के लिए पहले से तैयार था मैं।

लाख तैयारी करके रख ले। पर आज तुझे मेरे हाथों मरने से अगर कोई बचा सकता है।
तो सिर्फ गुरुत्वा और कोई नहीं।
हम्फफ
अपनी जिंदगी के लिए मशक्कत करना छोड़ देगा तो तकलीफ कम होगी। तुझे एक आसान मौत देगा गुरुत्वा।
फैसला तेरे हाथ में है। आसान मौत मर ले या फिर तड़प-तड़प कर दर्दनाक मौत।
उसकी मौत में अभी टाइम है नमूने...

तू बता आसान मौत चाहेगा या दर्दनाक तड़पती मौत?
आर्रर्रर्रर्रघ!
मैं गोविलकर को देखती हूं! तुम इसे काबू में करने की कोशिश करो! जल्द ही तुम्हें जॉइन करती हूं!
जरूर!
वैसे मुझे नहीं लगता कि तुम्हें जॉइन करने की जरुरत पड़गी! अधमरा ये अभी ही हो गया है! मेरा मुकाबला करने लायक शक्ति इसमें नहीं...
होगीSSSSSSSS SSSSSSSSS!!!
हा हा! मुझसे मुकाबला करने के लिए भेजा भी तो किसे? बच्चों को!
लड़की! हट जा रास्ते से! अभी तूने दुनिया नहीं देखी! छोटी सी उमर में परलोक सिधारने का शौक नहीं है तो हट जा!
दुनिया तो मुझे अभी खूब देखनी है! पर तुमने जितनी दुनिया देखी है वो तुम्हारे लिए काफी है! अब दूसरी दुनिया की सैर को तैयार हो जाओ!

GREAT! इससे निपटना इतना आसान होगा, सोचा न था! पर मैं चिंता क्यों कर रही हूं मुझे तो खुश होना चाहिए!
चलो! अब गोविलकर और आवेग को देखती हूं!
या SSSSSSSSS डर्रर्घ!

बहुत समय व्यर्थ हुआ। बहुत अड़ंगे आ गए काम के बीच। अब बस आखिरी वार और एक साथ दोनों समाप्त।
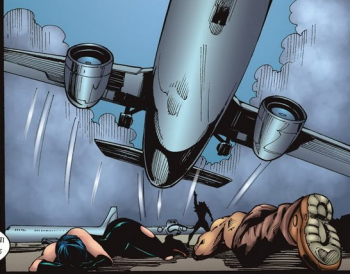
जा को राखे साईंयां, मार सके ना कोय।
धम्मामऽऽऽ।
हाऽऽह! फिर नया अड़ंगा। और कितने अड़ंगे आने लिखे हैं गोविलकर की मौत के बीच।
हां! पर इस बार सबसे बड़ा अड़ंगा और आखिरी भी क्योंकि इसके बाद तेरा जीवन बचेगा ही नहीं।
HFI
पर मरने से पहले ये बताना जरूरी है कि तुम ये सब क्यों कर रहे हो? किसके कहने पर कर रहे हो?
जरूर बताऊंगा! सब बताऊंगा पर तुझे नहीं, तेरी लाश को।

अफसोस तुम्हारी ये इच्छा पूरी नहीं हो पाएगी कम से कम इस जन्म में तो नहीं।
पर तुम्हें अपनी जुबान खोलनी होगी वो भी यहीं इसी जन्म में।
स्वूऽऽऽश!!
धाऽऽऽऽड़!!
आऽऽऽऽह।
बूम्म
बूम्म ऽऽ
पर पूछताछ शुरू करने से पहले तुम्हारी मस्ती करने वाली शक्ति को शांत किया जाए।
ओह! तुम्हें तो दर्द भी होता है। खैर चलो बताओ। क्यों मारना चाहते थे गोविलकर को? और क्या जॉन को मारने वाला भी तुम्हारा ही साथी था? क्यों पड़े हो इन लोगों के पीछे?
तुम्हारा...आऽऽह! तुम्हारा इससे... कोई लेना देना नहीं है। तुम...तुम इनके साथ अपनी जान भी खतरे में डाल रहे हो। इन्हें तो मरना... ही है। मैं नहीं तो...कोई और मार डालेगा।
पर इस मसले में...टांग अड़ा कर बचोगे तुम भी नहीं। तुम्हारा भी वही अंजाम होगा। जो जॉन का हुआ और बाकियों का होगा।

न मेरा अंजाम बुरा होने वाला है। न बाकियों का। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम इस सबके पीछे के कारण को बता दो। वरना अभी हाथों से गए हो। जान से जाने में देर ना लगेगी।
और तेरी भलाई इसी में है कि तू इन सबसे दूर रह।
स्वूऽऽश
ओफ्फ!
ओह! क्या था वह? गुरुत्वा को भी अपने साथ ले गया।
पर लग रहा है मेरा यहां आना बेकार नहीं गया।
जिस सिलसिले में मैं यहां आया हूं। यह हमला भी उसी से सम्बंधित लग रहा है।
मेरा यहां आने का कारण तो डॉक्टर राम शास्त्री का मेरे डोगा और कोबी के लिए दिया गया वो स्टेटमेंट है। जिसमें उसने हम सभी को भी म्युटेंट बतलाया है।
और शहर में फैली अजीबो-गरीब बीमारी की वजह हमें बताया है।
जनता में हमारे प्रति जो डर और अविश्वास पैदा हुआ है उसे मिटाने तो आना ही था मुझे।
उठो! तुम ठीक हो तो हो ना? कौन था ये प्राणी और तुम लोगों की क्या दुश्मनी है उससे?
नागराज? तुम नागराज हो ना?
हां!
मैं ये तो नहीं जानता नागराज कि उसकी क्या दुश्मनी है हमसे। यहां वो सिर्फ मुझे मारने आया था। पर सिर्फ मैं नहीं और भी खतरे में हैं।
क्या मतलब?
मतलब यह कि...

"हमारे जैसे और भी हैं।"
अब बताओ ये सब क्या है? तुम कौन हो? मुझसे क्या चाहती हो?
मेरा नाम उजाला है डोगा। मैं जन्मांध हूं। लेकिन फिर भी देख सकती हूं। दूसरों की आंखों से।
दूसरों की आंखों से?
हां डोगा! ये कुदरत का करिश्मा है। मैं जिसे छूती हूं उसकी आंखों से सब देख सकती हूं। मुझे पता नहीं ये पॉवर मुझमें कब और कैसे आई।
मुझे बस इतना पता है कि इसने मेरी जिंदगी को मजाक बना दिया। कोई मुझे झूठी कहता तो कोई मक्कार। मगर सच सिर्फ मुझे पता था कि मैं वाकई अंधी हूं। मैंने एक बिल्ली पाली थी। उसे ही अपनी आंखें बना लिया पर अब वो भी मुझसे छिन गयी।
क्या तुमने कभी अपनी आंखों का चेकअप नहीं करवाया?
कभी ये जानने की कोशिश नहीं की कि ऐसा क्यों है?
हां। मैंने अपनी आंखों का चेकअप करवाया था। डॉक्टरों का कहना था कि मेरी आंखें बिल्कुल ठीक हैं उनमें कोई विकार नहीं है।
इस बात ने लोगों की इस धारणा को और भी मजबूत कर दिया कि मैं नाटक करती हूं और लोगों की सहानुभूति हासिल करना चाहती हूं।
हुम्म! काफी दिलचस्प कहानी है तुम्हारी। पर तुम मुझसे क्या चाहती हो? मैं भला तुम्हारी इस मामले में क्या मदद कर सकता हूं।
मेरी समस्या का कारण मेरा अंधा होना नहीं है। मेरी असली समस्या है एक सपना, जो मैं हर रोज देखती हूं।
सपना? कैसा सपना? सपना भी कहीं कोई समस्या होती है।
मेरे लिए सपना भी समस्या है। क्योंकि कुदरत ने मुझे एक और पॉवर दी है। मैं किसी भी प्राणी को छूकर उसका भूत या भविष्य देख सकती हूं।

"इन्ट्रेस्टिंग! एक और नई पॉवर! और तुम्हारा सपना क्या है? क्या दिखता है तुम्हें।"
"बहुत अजीब सा! बहुत विकृत!"
"मुझे तुम दिखते हो, नागराज दिखता है और दिखता है..."
"...एक भेड़िया जैसा प्राणी!"
अपने आपको हमारे हवाले कर दो म्युटेंट! वरना हम तुम्हारे बदन में सैकड़ों छेद कर देंगे।
तुम्हारी तो ऐसी की तैसी!
कोबी जब प्रहार करेगा तब तुम जलील इंसानों के पास बचने का कोई रास्ता नहीं होगा।
फायर!
तड़ तड़ तड़
कोबी पर तुम्हारे इन पटाखों का कोई असर नहीं होगा परंतु...
उफ! कहां आकर फंस गया! जिसने मेरी गदा चुराई थी उस रहस्यमय आकृति का पीछा करता हुआ मैं एक अजीबो गरीब स्थान पर पहुंच गया था।

"वो एक गुम्बद था! अस्थियों से बना गुम्बद।"
"उस गुम्बद की तरफ बढ़ती गदा ने मुझे उस आकृति की मंशा को समझा दिया था।"
"परंतु मैं कुछ करने की स्थिति में नहीं था।"
"मेरा सारा क्रोध उस आकृति पर निकला।"
"क्रोध में आकर मैंने उस सूत्र को ही खत्म कर दिया जो मुझे उस दुष्ट षड्यंत्रकारी तक पहुंचा सकता था।"
"लेकिन उस गुम्बद से निकले 9 प्राणियों ने मुझे समझा दिया कि वो उस षडयंत्र की ही कोई कड़ी है।"
"उनको देखने से ही प्रतीत हो रहा था कि उनके इरादे नेक नहीं हैं।"
"मैंने उनको रोकने की कोशिश की परंतु उनकी संयुक्त शक्ति के सामने मैं टिक नहीं पाया।"
"उनके संयुक्त वार ने मुझे थोड़ी देर के लिए अचेत कर दिया।"

अब मुझे तलाश है उन 9 प्राणियों की जो मुझे बता सकें कि सारा माजरा क्या है और मेरी घ्राण शक्ति बता रही है कि वो मुझसे ज्यादा दूर नहीं हैं।
चल भेड़ाहन।
कोबी की घ्राण शक्ति उसे जहां ले जा रही थी।
डोगा का अगला पड़ाव भी वहीं था।
हुम्म! तो तुम ये कहना चाहती हो कि मैं, नागराज और कोबी भविष्य में तुम्हारी मौत का कारण बनेंगे और ये दुनिया म्युटेंट बन जाएगी।
पक्का नहीं कह सकती डोगा! क्योंकि मुझे जो सपने आते हैं उसका कुछ अंश हमेशा बदला हुआ होता है।
हो सकता है तुम तीनों मेरी मौत का कारण ना बनो बल्कि मुझे बचाओ। या वो काली आकृति जो उस बिल्डिंग के अंदर खड़ी थी वो मेरी दुश्मन हो।
अपने सपने को फिर से याद करो और उस बिल्डिंग की लोकेशन याद करने की कोशिश करो।
मैंने बहुत कोशिश की पर पता नहीं कर पाई। पर हां एक चीज मैंने नोटिस की है।
उस बिल्डिंग के बाहर कुछ लिखा था। शायद....

"ऑलराउंडर"

कड़ड़ाक!!!

महाराज नरहरि की जय हो। सेनापति गजबल का प्रणाम स्वीकार करें।

तुम लोग? यहां भी पहुंच गए।

हमें तो आना ही था महाराज। आपके धोखे का जवाब भी तो देना था।

मैं अपनी गलती मानता हूं सेनापति गजबल। हमसे अपराध हुआ था उसका पश्चाताप हमें आज भी है। लेकिन इसकी सजा इन निर्दोष लोगों को मत दो। ये मेरी वर्षों की तपस्या का फल है।

तूने जो हमें सदियों की मानसिक यातना दी है। ये उसका उत्तर है नरहरि। अब तू अपने अंजाम से नहीं बच सकता और ये मत समझना कि पिछली बार की तरह हम तेरी शक्तियों के अधीन होकर बेबस हो जाएंगे। इस बार हम तेरी और तेरी सेना की शक्तियों का तोड़ भी लाए हैं।

चीफ! इसने हम पर एक्सट्रा म्युजेल का वार किया है जो हमारी संतुलित पावर को असंतुलित कर देता है और हमें भीषण पीड़ा होती है और हम होश कायम नहीं...एक मिनट! आप पर म्युजेल का असर क्यों नहीं हुआ?
इसका मतलब...
तू म्युटेंट नहीं है नरहरि।
आह!..तुझे कैसे मालूम?
मेरे अंजान साथी ने बताया। पहले हम यह समझ रहे थे कि हममें वज्र की शक्तियां समाई हैं लेकिन हमारा स्पर्श वज्र से नहीं हमारा स्पर्श उन कंकालों से हुआ था। पर तेरा नहीं। फिर भी तुझमें पावर आई। इसका मतलब तुझमें वज्र की दैवीय शक्ति आई थी जो कंकालों में समाई अभिशप्त शक्ति की काट थी। तब मेरे साथी ने मुझे ये गोला दिया ताकि एक पंथ दो काज हो सकें।
म्युजेल की शक्ति ने सारे अभिशप्तों की शक्ति को अनियंत्रित कर दिया और तेरी शक्तियों को भी काट दिया। अब तू हमारे सामने बेबस है नरहरि। आज हमारा बदला पूरा होगा।
मरने के लिए तैयार हो जा।

तू?
हां मैं।
मित्र कोबी।
हां मित्र तुम ठीक तो हो ना?
आह!
मैं आया तो था उन षड्यंत्रकारियों को सजा देने जिन्होंने मेरी गदा चुराई थी, पर यहां तो मामला ही दूसरा है।
देखते क्या हो साथियों। खत्म कर दो इन दोनों को।

ये तिलिस्मी भेड़िए हैं। तुम्हारा कोई भी वार इनको नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा जबकि ये बहुत मजे से तुमको नोचेंगे। हमारी पहली भेंट में मुझे इनके इस्तेमाल का मौका नहीं मिला वरना तुम्हारी लगामें तो मैं तभी कस देता।
अब मुझे बताओ ये सब माजरा क्या है।
मैं तुम्हें बताता हूं।

प्रोफेसर राम शास्त्री...आप?
हां मैं। इस सारे षड्यंत्र का सूत्रधार। मैंने ही विचित्र प्राणी भेजकर कोबी की गदा चुराई और फिर क्रिस्टल डोम तोड़ा। मुझे तो बस म्युजेल चाहिए था पर बोनस में ये नौ म्युटेंट्स मिल गए। इनकी वजह से मुझे तेरे बारे में पता चला और मेरी तो लॉटरी लग गई, क्योंकि मुझे अपने प्रयोग के लिए चाहिए था ढेर सारा म्युजेल जो सिर्फ म्युटेंट्स से ही मिल सकता था। अब मेरे लिए म्युजेल हासिल करना कोई मुश्किल काम नहीं है, क्योंकि तुम सब इस वक्त बेबस हो।
तू मुझे भूल गया शैतान।
नहीं मैं तुझे नहीं भूला। जरा पीछे देख।
तुम लोग मेरी भेड़िया फौज से कैसे बच गए? ये भेड़िए तो तिलिस्मी थे और तिलिस्मी भेड़ियों को तो सिर्फ...
तिलिस्मी शक्तियों से ही खत्म किया जा सकता है और मैंने यही किया है। तेरी तिलिस्मी शक्तियों को कीलित कर दिया। अब तू किसी भी तिलिस्मी शक्ति का इस्तेमाल नहीं कर पाएगा।
ये तूने कैसे...अक्क!
भडा म!!
अगर मुकाबला तिलिस्मी शक्तियों से तय नहीं हो सकता तो नागशक्तियां तय करेंगी।

या फिर तय करेगा डोगा के जुनून का लावा।
आSSSह!
भक्क!!!
जो तुम्हें खाक में मिला देगा।
आह!
मेरी भाप तुम्हारे लावे को भी बुझा सकती है डोगा और...
उफ! ऐसा लग रहा है। बदन में जान ही नहीं है। शायद मैं निर्जलन का शिकार हुआ हूं।
तुम्हें भी।
डोगा और कोबी तो बेबस हो गए थे अब सारी आस एक ही शख्स पर टिकी हुई थी...

...नागराज पर।
आ आSSS
इतना बेसुरा तो रियलिटी शो के सिंगर भी नहीं गाते जिनको जजेस के इतने तीखे कमेंट सुनने पड़ते हैं।
अक्!
भड़ाम!!!
तू तो डेंजर जोन में भी जाने लायक नहीं है।
तूने गुंची को मार दिया अब किसी लायक तू भी नहीं रहेगा।
अरे वाह! हमारे रक्षक तो बहुत जल्दी धराशायी हो गए। सोचा ना था ये काम इतना आसान होगा।
तो हम फिर से शुरू करें?
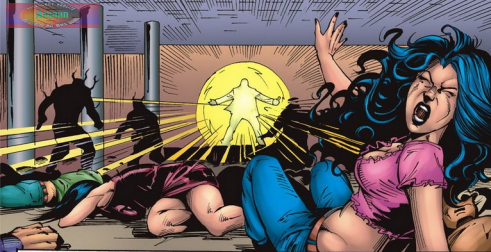
आह! ये क्या... ये तुम क्या कर रहे हो?
तुम लोगों का काम खत्म हो चुका है।
इसलिए अब तुम्हें भी खत्म हो जाना चाहिए!
हां और अगला नम्बर तुम्हारा है नरहरि! जब सेना ही नहीं रहेगी तो राजा का क्या काम।
काम तो तुम्हारा भी इस दुनिया में नहीं है!

Amaan
तुम ठीक कैसे हो गए?
ये तो सिर्फ पानी था अगर मेरा सारा लहू भी निकल जाता ना डोगा फिर भी खड़ा हो जाता।
हम भी ठीक हो गए हैं।
तुम लोग ठीक कैसे हो गए?
नागराज मौका भांपते ही इच्छाधारी कणों मे बदल गया था जिसके कारण आर-पार उसे पूरी तरह नुकसान नहीं पहुंचा पाया और मेरी आभूषणों की शक्ति को ज्यादा देर तक कीलित नहीं किया जा सकता।
सिर्फ डोगा ही नहीं...
मेरे इस विराट रूप के बारे में क्या विचार है?
आह!!!!
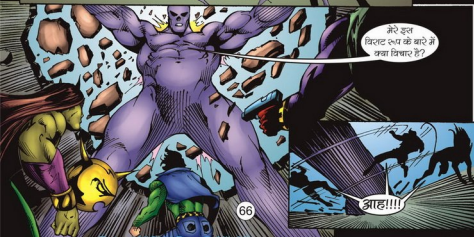
ABSORB
RELEASE
आह...नहीं।
नागराज, डोगा तुम! अच्छा हुआ तुम मिल गए मैं तुम्हें ही ढूंढ...अक्!
विराट रूप से असली रूप में आ गया रामशास्त्री।

भ ड़ा म!!!
ये क्या? कहानी का मेन विलेन ही खत्म।
ये कहानी का मेन विलेन नहीं था। मैंने इसकी आंखें देखी थी ऐसा लग रहा था कि जैसे ये जो कुछ कर रहा था नींद में कर रहा था।
मैंने भी एक चीज गौर की थी मैंने राम शास्त्री का इंटरव्यु टी.वी.मे देखा था। इसकी बॉडी लेंग्वेज बिल्कुल बदली हुई थी ऐसा लग रहा था जैसे ये नही...
तुम लोग क्या कह रहे हो मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा। मैं बस इतना जानता हूं कि मेरा काम पूरा हुआ अब मैं चला वापस जंगल। दुनिया जाए भाड़ में मेरी बला से।
उजाला तुम्हारी आंखें ठीक हो गईं यानी तुम्हारे अंधेपन की वजह म्युटेंसी थी?
हां डोगा! और ये वही जगह है जो मेरे सपने में आती थी और वो अंजान शख्स...
ये है।
यही है वो शख्स जिसकी शक्ल क्लीयर नहीं दिखती थी। यही है सारे फसाद की जड़...ओह माई गॉड!
ये तो ठीक वही सिचुएशन है जो मेरे सपने में आती है यानी... यानी मैं मरने वाली हूं।
नहीं!!!!

धांए
धांए
धांए
ये सब क्या है?
शायद दुनिया को ऑलराउंडर की सच्चाई का पता चल गया है और सरकार ने हमें अभिशप्त करार देकर खत्म करने के ऑर्डर जारी किए होंगे।
इन सबके जिम्मेदार तुम हो? ये सब तुम्हारा किया-धरा है। उजाला द्वारा तुम्हें पहचानने के बाद ये साबित हो गया कि तुम ही ये सब कर रहे थे और तुम्हारे लिए ये सब करना बहुत आसान था, क्योंकि सारे म्युटेंट तुम्हारा आदेश मानते थे।
ये सब झूठ है।
अपनी जुबान को लगाम दे कुत्ते की दुम वरना इन्हीं नाखुनों से नोंच डालूंगा।
तुम लोग आपस मे लड़ना बंद करो। एक सपने को आधार बनाकर हम नरहरि को दोषी नहीं मान सकते। फिलहाल हमें अपना ध्यान बाहर आई फोर्स से निपटने में लगाना होगा।
हमें पता है कि इस बिल्डिंग के अंदर सारे लोग म्युटेंट हैं। आपको चेतावनी दी जाती है कि आत्मसमर्पण कर दें वर्ना पूरी बिल्डिंग उड़ा दी जाएगी।
अब क्या होगा चीफ? अगर हमने आत्मसमर्पण नहीं किया तो शर्तिया मारे जाएंगे।
और अगर कर भी दिया तो बचेंगे फिर भी नहीं।
तुम लोग गलती कर रहे हो इस इंसान पर भरोसा करके।
तुम लोग मुझे थोड़ा सोचने दोगे या यूं ही बड़-बड़ करते रहोगे।
अब तो हमारे पास कोई शक्ति भी नहीं बची।
और तुम मिस उजाला देखो पता नहीं तुमने क्या देखा मुझे नहीं मालूम...
पर फिलहाल अपना मुंह बंद रखो। पता नहीं इस मुसीबत से कैसे...एक मिनट।
आत्मसमर्पण की तैयारी करो।
नरहरि के दिमाग मे जो भी प्लान था।

उसका असर बाहर निपट रहे हीरोज पर भी पड़ा था क्योंकि वो लड़ने के बजाय खिसकने की सोच रहे थे।
सांय
घाएं
हुंह! इंसान कहीं के। अगर नरहरि ने मजबूर ना किया होता तो मेरे बजाय ये सब भाग रहे होते।
घाएं
पता नहीं नरहरि इस सिचुएशन को कैसे हैंडल करेगा पर फिलहाल यहां से निकलना मजबूरी है। वरना बेगुनाह म्युटेंट मारे जाएंगे।
रैट
घाएं
सांय
उजाला को अपने साथ नहीं ला सकता था वरना इन गोलियों की बौछार से वो हर्गिज नहीं बच सकती थी।
बड़ाम
घाएं
घाएं
घाएं
रैट
घाएं
हीरोज तो निकल गए थे अब बारी...
म्युटेंट्स की थी।
POLICE
70

म्युटेंट से जुड़ी एक और सनसनीखेज घटना प्रकाश में आई। एक गुप्त रिपोर्ट के अनुसार पुलिस फोर्स ने ऑलराउंडर नाम की प्लेसमेंट कंपनी पर छापा मारा है। बताया जाता है कि इस कम्पनी द्वारा नियुक्त सारे कर्मचारी म्युटेंट हैं। हालांकि अभी इसकी अधिकारिक पुष्टि नहीं हो पाई है पर नागराज, डोगा और एक भेड़िया प्राणी द्वारा वहां से निकल भागने से तथा कई अजीबोगरीब प्राणियों के मिलने से यही साबित होता है कि म्युटेंट्स की सारी गतिविधियों का केंद्र ऑलराउंडर ही है।

इससे पहले ये बात साबित हो चुकी है कि मशहूर फुटबॉल प्लेयर जॉन और A.T.S. चीफ गोविलकर भी म्युटेंट थे। नागराज और डोगा को देखने वाले प्रत्यक्षदर्शियों का कहना था कि उनका शरीर विकृत हो चुका था जो उनकी म्युटेंसी बढ़ने का सबूत है।
पूरी मुम्बई की जनता में आक्रोश है। म्युटेंट्स का बहिष्कार करने के लिए लोग सड़कों पर निकल आऐ हैं और आगजनी कर रहे हैं। लोगों में नागराज, डोगा और बाकि म्युटेंट्स के लिए गुस्सा है। वो बर्थ डिफेक्ट और पेट्स डिफेक्ट के लिए इन म्युटेंट्स को जिम्मेदार मान रहे हैं।
ये म्युटेंट्स को समाज के लिए अभिशाप मान रहे हैं। ताजा सूचना ये है कि आक्रोशित भीड़ ने ऑलराउंडर की बिल्डिंग पर भी हमला किया जहां से कथित म्युटेंट्स को गिरफ्तार किया गया था।
इस बात पर और प्रकाश डालने के लिए हम एक बार फिर स्वागत करना चाहेंगे प्रोफेसर भास्कर का।
माफ कीजिएगा इस बार प्रोफेसर राम शास्त्री अनुपलब्ध होने के कारण उपस्थित नहीं हैं।

प्रोफेसर साहब पिछले दिनों जो कुछ हुआ इस बारे में आपकी प्रतिक्रिया?
मेरे विचार से बिना किसी सबूत के एक इतनी बड़ी कंपनी पर आरोप लगाना सही नहीं है।
पहले साबित तो होने दो कि वो म्युटेंट हैं और रही बात नागराज और डोगा के विकृत होने की तो मैं यही कहूंगा कि ये पेट्स डिफेक्ट का असर है। इस पर इतनी हाय-तौबा मचाने की जरूरत नहीं है।

ये तो थे प्रोफेसर भास्कर के विचार। पर मुम्बई के लोगों के विचार इनसे जरा अलग हैं।

"वो अब म्युटेंट्स को बख्शने के मूड में बिल्कुल नहीं हैं।"
इस रिसर्च सेन्टर में बंद किया गया है सभी म्युटेंट्स को।
खत्म कर दो इनको।
वरना ये हमारी पीढ़ियां बर्बाद कर देंगे।
हे भगवान! इन लोगों के इरादे नेक नहीं हैं। अब क्या होगा?
तू तो सपने में आगे की चीजें देख लेती है ना! दो घंटे सो जा खुद ही पता चल जाएगा।
तुम बकवास बंद...ओह नो!
क्या हुआ?
हे भेड़िया देवता! ये सब क्या है।
"खुद देख लो।"
ये क्या हो रहा है?
हमारा रूप बदल रहा है।
हम भी म्युटेंट बन रहे हैं।
"मेरे सपने के सच होने की शुरुआत हो गई।"
उजाला ने जो कहा था वो सच होने वाला है।
"अब इसका असर धीरे-धीरे पूरी दुनिया में दिखने लगेगा।"

ये लोग आक्रामक हो रहे हैं। शायद भय और आश्चर्य ने इनकी बुद्धि को प्रभावित किया है। इनको रोकना होगा।
मगर कैसे? हमें तो ये भी पता नहीं कि ये सब कर कौन रहा है?
उफ! इनको रोकना मुश्किल है।
मेरे पास इनका इंतजाम है।
अब थोड़ी देर तक ये लोग कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे। तब तक हमें मुख्य अपराधी तक पहुंचने का रास्ता निकालना होगा।
मैंने राम शास्त्री से लड़ते वक्त महसूस किया था कि उसकी बॉडी लेंग्वेज बदली हुई थी। और अभी थोड़ी देर पहले टी.वी. देखने के बाद मुझे याद आ गया है कि वो कौन था।
लेकिन अब जानने का फायदा ही क्या है? अब तो समय ही नहीं बचा तुम्हारे पास।

बहुत सस्पेंस हो गया अब क्लाईमेक्स तक कहानी पहुंच गई है और विलेन ही गायब है ये कोई बात हुई। तो मैंने सोचा कि चलो तुम्हारी मौत से पहले तुम लोगों को ये बता दूं कि सारा मामला क्या है।

मैं हूं इन सारे षड्यंत्रों का सूत्रधार। वैसे हमारी मुलाकात ऑलराउंडर की बिल्डिंग में ही हो गई थी राम शास्त्री के रूप में। वो बेचारा तो निर्दोष था मुफ्त में मारा गया। बस उसकी गलती ये हुई कि समय से पहले मेरा राज जान गया। मैंने अपना मानस अंश उसके अंदर डाला था और फिर वो मैं बन गया था।
हम दैत्य हैं। तुमसे कहीं बेहतर जीव। फिर भी सदियों से पाताल में छुप कर रहना पड़ता था वजह थी देवता तुम पर ज्यादा ही मेहरबान थे। हम पर तुम्हारा कोई भी मानवीय अस्त्र बेअसर है यहां तक कि एटम बम भी। खतरा था तो सिर्फ दिव्यास्त्रों से जो देवताओं ने तुम लोगों को थोक के भाव में दे रखे हैं।
दिव्यास्त्रों के विकिरण से हमें म्युजेल भी पूर्ण रूप से बचा नहीं पाता था। पहले हमें ये सब पता नहीं था पर हम सदियों से तुम इंसानों के बीच रूप बदल कर घुलते-मिलते रहे थे जैसे-जैसे विज्ञान से हमारा परिचय हुआ। हमें अपनी शक्तियों पर शोध करने में आसानी होने लगी। तब हमें पता चला कि हमारी शक्तियों का स्त्रोत था म्युजेल जो हमें हर तरह के अस्त्र और विकिरण से बचाता था। लेकिन हमारे अंदर इतनी मात्रा नहीं थी कि दिव्यास्त्रों से बच सकें।

तब मैंने शोध कर पता लगाया कि अगर हमारे अंदर म्युजेल का स्तर बढ़ जाए तो हम अभेद हो सकते हैं। पर समस्या ये थी कि शोध के लिए बहुत ज्यादा मात्रा में म्युजेल चाहिए था जोकि हमारे पास था नहीं। फिर मुझे पता चला कि मुम्बई मे एक क्रिस्टल डोम है जिसमें म्युजेल बहुत ज्यादा मात्रा में है। मैंने उसे तोड़ने की कोशिश की पर सफल नहीं हुआ। उसे तोड़ने के लिए भी दिव्यास्त्र की जरूरत थी जो हमारे पास नहीं था।
फिर मुझे पता चला कालकेतु कोबी के बारे में। मैंने कोबी पर हमले करवाए और उसे गदा का आह्वान करने पर मजबूर किया।
गदा प्रकट होते ही मैंने उसकी चोरी करवाई और डोम को तुड़वा दिया। मेरा काम तो हो गया पर डोम टूटते ही सदियों से सोये नौ म्युटेंट जाग गए। मेरी दिलचस्पी इनमें बढ़ गई। मैंने उन नौ से दोस्ती कर ली। वो अपने गद्दार राजा की खोज में थे। उनकी कहानी जानकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। मैंने उन पर शोध किया तब मुझे पता चला कि उनके अंदर भी म्युजेल था। उसी वक्त मैंने फैसला कर लिया कि मैं तुम इंसानों को अपनी म्युजेल फैक्टरी बनाऊंगा।

उससे पहले मैं तुझे राख का ढेर बना दूंगा।
"मैंने शोध शुरू तो किया पर कुछ गड़बड़ हो गई जिससे मुम्बई में पेट्स डिफेक्ट और बर्थ डिफेक्ट की घटना हुई और तुम लोग सक्रिय हो गए। मैंने तुम सबका ध्यान मोड़ने के लिए उन नौ म्युटेंट्स की मदद की और तुम लोगों पर भी इल्जाम लगवाए। लेकिन अब इसकी जरूरत नहीं रही। देखो सारी दुनिया म्युटेंट में बदलने वाली है अब मेरे दैत्य साथी भी इस जंग में कूदेंगे जो मानवों के बीच छुपकर रहते हैं।"
तेरे दोनों कानों के बीच कुछ है या नहीं। मैंने कहा था इंसानों के बनाए कोई भी घातक अस्त्र मुझ पर बेअसर हैं।
धाड़!!!
इंसानी अस्त्र ही बेकार हैं ना, दिव्यास्त्र तो नहीं। अब कोबी तुझे दिव्यास्त्र से ही खत्म करेगा।
हे भेड़िया देवता मदद!
मैं तुम्हें एक बात तो बताना भूल ही गया।
मैंने अपने शरीर में म्युजेल का स्तर बढ़ा लिया है।

धाड़!!!
हा हा हा!
आक्!
देखता हूं तेरा म्युजेल तुझे मेरे जहर से भी बचा सकता है या नहीं!
अफसोस! तुम्हारा जहर भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता पर मेरी शक्ति तुम्हें धूल जरूर चटा सकती है!
आह!
उफ्! मेरे जहर ने मुझ पर ही उल्टा असर दिखा दिया! पर ये असर ज्यादा देर नहीं रहेगा! मेरे सूक्ष्म सर्प जल्द ही इसे ठीक कर देंगे!

हा हा हा! अब मैं अजेय हूं और जल्द ही मेरी जाति भी अजेय होगी फिर...
...हम पूरे ब्रह्मांड पर राज करेंगे।
"...हमें रोकने वाला कोई नहीं होगा।"
"...कोई भी नहीं"

रिसर्च सेंटर-
नागराज तुम?
हां मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।
मगर हम जाएंगे कैसे?
ये सोचना मेरा काम है। अग्निका बाहर आओ।
दूसरी तरफ।
यही वो स्थान है जहां इन दुष्ट दैत्यों ने अपना अड्डा बनाया हुआ है। म्यूटेंट बने इंसानों की एनर्जी यहीं खींची जा रही है।
ये लोग बच कैसे गए? उफ! प्रक्रिया शुरू हो चुकी है मैं अब यहां से नहीं हट सकता। अब सारी म्यूटेंट्स की म्युजेल में यहीं से खींच सकता हूं।
मुझे जल्दी मुम्बई में फैले हमारे सारे एजेंटों से संपर्क करके उन्हें यहां बुलाना होगा। अगर ये अंदर आने में सफल हो गए तो सारा प्लान चौपट हो सकता है।
गुड! हमारे सारे एजेंट्स अड्डे की तरफ बढ़ रहे हैं।

ये क्या है नागराज?
ये वज्र है जो पहले भी इन दैत्यों का काल बना था। नरहरि की मदद से मैं इसे ढूंढ पाया। अब ये इन दैत्यों का समूल नाश करेगा।
नहीं!!!

भड़ाम!
दैत्यों का किस्सा हमेशा के लिए खत्म! वज्र ने सारी म्युजेल खत्म कर दी होगी।
मगर नागराज मुम्बई वासी जो म्युटेंट बन गए हैं उनका क्या होगा।
उन पर म्युजेल का असर खत्म हो गया होगा क्योंकि उनकी सारी म्युजेल भास्कर ने खींच ली थी। देखो हम भी ठीक हो गए।
भास्कर को क्यों भूल रहे हो? उस पर दिव्यास्त्र भी बेअसर था।
ऐसा उसका सोचना था। वास्तव में वो सामान्य दिव्यास्त्र से अभेद था। वज्र जैसे दिव्यास्त्र से वो हर्गिज नहीं बच सकता है। ये किस्सा खत्म समझो।
ऑलराउंडर में।
अगर आज तुम तीनों नहीं होते तो हमारी कम्युनिटी मिटा दी जाती। मैं तुम्हारा अहसानमंद हूं।
वो सब छोड़ो मुझे तो ये बताओ कि तुम लोगों को छोड़ कैसे दिया गया?
DNA टेस्ट में साबित नहीं हुआ कि हम म्युटेंट्स हैं क्योंकि राम शास्त्री ने हमारी म्युजेल खींच ली थी जिससे हम नॉर्मल हो गए थे।
तो क्या चीफ! हम हमेशा के लिए नॉर्मल हो गए?
तो क्या मैं फिर से अंधी हो जाऊंगी?
नहीं स्वीटी! बाकी मुम्बई वासी तो हमेशा के लिए ठीक हो गए पर हमारे साथ ऐसा नहीं होगा क्योंकि हम काफी समय से म्युजेल के संपर्क में है। अभी भले ही हमारे अंदर म्युजेल नहीं है पर कुछ दिनों में वो खुद ही बनना शुरू हो जाएगा।
कुछ कहा नहीं जा सकता। हो सकता है इसका तुम पर कुछ अलग प्रभाव पड़े। ये तो वक्त बताएगा। मिस उजाला! लेकिन तुम फिक्र मत करो। अब तुम हमारी प्लेसमेंट कंपनी के लिए काम करोगी हम इसका कोई ना कोई हल निकाल लेंगे।
थैंक्स सर।
पर तुम्हारा इस तरह से म्युटेंट्स को प्लेस करना कहां तक सही है? इस तरह तो तुम आम इंसानों से उनका हक छीन रहे हो।
नहीं डोगा! यह कम्पनी किसी भी तरह से इंसानों का हक नहीं छीन रही। हमारी कम्पनी सिर्फ उन्हीं क्षेत्रों में प्लेसमेंट देगी या दे रही है जहां साधारण इंसानों का काम करना उनके लिए भी खतरनाक है।
और फिर ये सारे ऑलराउंडर्स अपने निजी स्वार्थ के लिए काम नहीं करते। इनके काम से जितना फायदा इन्हें नहीं होता उससे कहीं ज्यादा समाज को होता है।
मुझे लगता है नरहरि ठीक कह रहे हैं।
वो सब ठीक है पर वो नौ सेनानायक कहां हैं। क्या हुआ उनका?
उनकी चिंता तुम मत करो। वो मेरी कैद में हैं और वो लोग आगे किसी को नुकसान न पहुंचाएं इसकी जिम्मेदारी मुझ पर है।
समाप्त